आचार्य पद्मनन्दि प्रथम

जीवन-परिचय : अचार्य पद्मनन्दि प्रथम वीरनन्दि के प्रशिष्य और बलनन्दि के शिष्य हैं। इन्होंने विजयगुरु के पास ग्रन्थों का अध्ययन किया था। आचार्य पद्मनन्दि राग-द्वेष से रहित और श्रुतसागर के पारगामी थे। वे आचार्य पद्मनन्दि प्रथम प्राकृतभाषा और सिद्धान्तशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान भी हैं।

आचार्य पद्मनन्दि प्रथम 11वीं शताब्दी के विद्वान हैं।

रचना-परिचय : पद्मनन्दि प्रथम के द्वारा लिखित दो रचनाओं का उल्लेख मिलता है—

1. जम्बूद्वीपपण्णत्ति : पद्मनन्दि ने श्री विजय गुरु के प्रसाद से जम्बूद्वीपपण्णत्ति की रचना माघनन्दि के शिष्य सकलचन्द्र और उनके शिष्य श्रीनन्दि के लिए की है। इस ग्रन्थ में 13 अधिकार हैं और 2427 गाथाएँ हैं। ग्रन्थ का मुख्य विषय मध्यलोक के मध्यवर्ती जम्बूद्वीप का वर्णन है। जम्बूद्वीप के वर्णन में भरत-ऐरावत आदि क्षेत्रों, हिमवान आदि पर्वतों, गंगा-सिन्धु आदि नदियों, पद्म महापद्म आदि समुद्रों का वर्णन है। यह ग्रन्थ भूगोल-खगोल का संक्षिप्त वर्णन करता है।

2. धम्मरसायण : पद्मनन्दि की दूसरी रचना धम्मरसायण है। इस ग्रन्थ में 193 गाथाएँ हैं। यह ग्रन्थ माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला से सिद्धान्तसार के अन्तर्गत प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ में धर्म की महिमा विस्तार से बताई गयी है। यथा—धर्म त्रिलोकबन्धु है, धर्म शरण है। धर्म से ही मनुष्य त्रिलोक में पूज्य होता है। धर्म से दिव्यरूप और आरोग्य प्राप्त होता है। धर्म के महत्त्व के साथ अधर्म का फल, नरकादि के दुख, सर्वज्ञ की परीक्षा और सागार-अनगार (श्रावक-श्रमण) धर्म का भी संक्षिप्त परिचय वर्णित है।